E-learning material prepared by Dr. Abha Jha

भारतीय भाषा विश्लेषण में निषेध की अवधारणा

डॉ आभा झा

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग ,डी एस पी एम यू ,राँची

भारतीय भाषा विश्लेषण के अंतर्गत निषेध की समस्या पर विस्तार से विचार किया गया है. निषेध अथवा अभाव की अवधारणा पर भारतीय तर्कशास्त्र विशेष रूप से नव्य न्याय तर्कशास्त्र में गहन विचार किया गया है.निषेध अर्थात किसी वस्तु के अस्तित्व अर्थात भाव को अस्वीकार करना अथवा नकारना. निषेध के विचार को समझने के लिए भाव के विचार को समझना आवश्यक है । जैसे- जमीन पर घड़ा नहीं है । इस वाक्य में जमीन का भाव तथा घड़ा का अभाव बताया गया है, जिसका अर्थ है घड़ा की उपस्थिति का नहीं होना. स्पष्ट है कि भाव और अभाव दोनों पद एक दूसरे के विरोधी नहीं है बल्कि एक दूसरे से संबंधित है.
जिस प्रकार संयोग और समवाय का ज्ञान सापेक्ष होता है उसी प्रकार भाव और अभाव का ज्ञान भी सापेक्ष है. अभाव वह सापेक्ष ज्ञान है जिसमें भाव पदार्थ की अनुपस्थिति पाई जाती है. जैसे - घड़ा के अभाव का ज्ञान । घड़ा को अनुयोगी और घड़ा के अभाव को प्रतियोगी कहा जाता है. अनुयोगी वह है जिसकी उपस्थिति रहती है तथा प्रतियोगी वह है जो योगी में अनुपस्थित रहता है . जैसे- चाय में चीनी नहीं है . यहां चाय अनुयोगी है और चीनी प्रतियोगी क्योंकि चाय में चीनी का अभाव है.

<u>**निषेध के तत्व :**</u>

अनुयोगिता- यह निषेध का प्रथम तत्व है ।अनुयोगिता वह आधार है जिसमें किसी वस्तु का अभाव पाया जाता है .जैसे -जमीन पर घड़ा नहीं है. इस उदाहरण में 'जमीन' अनुयोगिता है.

प्रतियोगिता- भाव का नहीं होना अर्थात अभाव को प्रतियोगी कहते हैं . घड़ा का नहीं होना अर्थात घड़ा का अभाव प्रतियोगिता है ।

अनुयोगितावच्छेदक धर्म- यह अनुयोगिता की वह विशेषता है जो अनुयोगी पद के अर्थ को स्पष्ट रूप से बताता है. जैसे ऊपर के उदाहरण में अनुयोगी पद ' जमीन' से यह स्पष्ट नहीं होता कि यहां संसार के सभी जमीन के विषय में कहा जा रहा है अथवा किसी खास जमीन के विषय में. इसे स्पष्ट करने में अनुयोगितावच्छेदक धर्म सहायक होता है.

प्रतियोगितावच्छेदक धर्म- यह प्रतियोगिता की वह विशेषता है जो प्रतियोगी पद के अर्थ को पूर्ण तः स्पष्ट करता है. ऊपर के उदाहरण में प्रतियोगी पद ' घड़ा' से स्पष्ट नहीं होता कि कौन से घड़े का अभाव बताया जा रहा है. सभी घड़े का या किसी खास घड़े का अभाव है . इसे स्पष्ट करने के में प्रतियोगितावच्छेदक धर्म सहायक होता है.

प्रतियोगितावच्छेदक सम्बन्ध - किसी वाक्य में कम से कम दो पद होते हैं- अनुयोगी और प्रतियोगी . इन दोनों पदों में संबंध रहता है जो प्रतियोगितावछेदक संबंध कहलाता है. यह दो प्रकार का होता है- संयोग और समवाय . यह संबंध स्पष्ट करता है कि दोनों में अभाव का संबंध संयोग संबंध से है अथवा समवाय संबंध से.

निषेध का अर्थ :

स्पष्ट है कि निषेध भाव में अभाव है का नाम है. किंतु वैशेषिक दर्शन में अभाव को भी पदार्थ के अंतर्गत रखा गया है. इस प्रकार पदार्थ के रूप में अभाव भी परम सत्ता है . अतः निषेध को वैशेषिक दर्शन में एक तत्वमीमान्सीय सत्ता माना गया है .

<u>वैशेषिक दर्शन के अनुसार निषेध के विभिन्न प्रकार</u> :

वैशेषिक दर्शन के अनुसार अभाव दो प्रकार के माने गए हैं- संसर्भागाभाव तथा अन्योन्याभाव . पुनः संसर्भागाभाव चार प्रकार के माने गए हैं - प्रागाभाव, प्रध्वंसाभाव , अत्यंताभाव तथा सामयिकाभाव.

संसर्गाभाव- यह दो पदों या वस्तुओं के संबंध का अभाव है. संसर्ग का तात्पर्य है एक वस्तु का दूसरी वस्तु में होना. जैसे -कटोरा में शहद है. जब कटोरी से शहद निकाल लिया जाता है तो कटोरा और शहद में कोई संबंध नहीं रहता अर्थात उनमें संसर्ग का अभाव हो जाता है. किंतु शहद में मिठास है- यह वाक्य बताता है कि शहद और मिठास का संबंध कभी समाप्त नहीं होता. संसर्ग के दो प्रकार के होते हैं -संयोग और

समवाय. कटोरा में शहद नहीं है -यह संयोग संसर्गाभाव है और नमक में मिठास नहीं है- यह समवाय संसर्गाभाव है.

प्रागाभाव - प्रागाभाव वह है जिसमें कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में नहीं रहता .जैसे- मिट्टी में घड़े का अभाव. जब तक मिट्टी से घड़ा नहीं बनता कब तक मिट्टी में घड़े का अभाव है. मिट्टी में घड़े का अभाव कब से है, यह जाना नहीं जा सकता. इसलिए प्रागभाव को अनादि और सांत कहा जाता है क्योंकि घड़ा के निर्माण के साथ ही इस अभाव का अंत हो जाता है.

प्रध्वंसाभाव - यह वह अभाव है जो किसी कार्य के विनाश होने पर आरंभ होता है. जब घड़ा टूट जाता है तो उस घड़े का निर्माण नहीं हो सकता. प्रध्वंसाभाव का अंत नहीं होता. यह सादि और अनंत है.

अत्यंताभाव- अत्यन्ताभाव वह अभाव है जो अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में पाया जाता है. इसलिए इसे त्रैकालिक अभाव कहते हैं. जैसे वायु में रंग का अभाव. यह अभाव अनादि और अनंत है.

सामयिकाभाव- यह अभाव वह है जो कुछ समय के लिए होता है. इस अभाव की शुरुआत होती है और इसका अंत भी होता है ,इसलिए इसे सादि और सांत कहा जाता है. जैसे- बेहोशी में चेतना का अभाव. जब व्यक्ति बेहोश होता है तो चेतना का अभाव हो जाता है ,किंतु जब वह होश में आ जाता है तो इस अभाव का अंत हो जाता है.
अन्योन्याभाव- यह वह अभाव है जिसमें दो पदों या वस्तुओं में तादात्म्य का अभाव होता है. तादात्म्य का अर्थ है अभिन्न होना. जैसे- घट पट नहीं है .इसका अर्थ है कि घड़ा और कपड़े में तादात्म्य का अभाव है. यह अभाव त्रैकालिक , नित्य, अनादि और अनंत है.
<u>**न्याय के अनुसार निषेध (अभाव) के प्रकार:**</u>

न्याय दर्शन वैशेषिक दर्शन द्वारा तत्व मीमांसीय दृष्टिकोण से प्रतिपादित अभाव के प्रकारों को स्वीकार करता है. किंतु नव्य न्याय में तार्किक दृष्टिकोण से भी अभाव के प्रकार का प्रतिपादन हुआ है जो इस प्रकार है .

अभावाभाव-

न्याय दर्शन में अभावाभाव नामक अभाव का उल्लेख है. उन्होंने इसे अभाव का प्रकार माना है तथा उनका मानना है कि अभाव का अभाव भाव है . अर्थात घटाभावाभाव= घट का भाव. पुनः घट-भाव का अभाव घटाभाव हो जाएगा. नव्य न्याय में घटाभावाभाव का बारीकी से विश्लेषण किया गया है.

सामान्याभाव तथा विशेषाभाव-

न्याय वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य और विशेष दोनों पदार्थ हैं .नव्य न्याय के अनुसार जब किसी तर्क वाक्य में कोई पद सामान्य का अर्थ प्रदान करता है और उस तर्क वाक्य में उस पद अर्थात सामान्य का निषेध किया जाता है तो उसे सामान्याभाव कहते हैं. जैसे घड़ा नहीं है. यहां घड़ा का अर्थ सामान्य घड़ा अर्थात संसार के तीनों कालों के सभी घड़ा हैं. इस वाक्य में सभी घड़ा के अभाव का बोध होता है. सभी घड़ा का अभाव ही सामान्य अभाव है. इसी प्रकार जब किसी तर्क वाक्य में विशेष का निषेध किया जाए तो उसे विशेषाभाव कहते हैं. जैसे - नीला घड़ा नहीं है. इस वाक्य में विशेष घड़ा का निषेध किया गया है. यह अभाव ही विशेषाभाव कहलाता है.

उभयाभाव- उभयाभाव तब होता है जब किसी वाक्य में प्रयुक्त पदों में किसी एक पद अथवा दोनों पदों के अभाव का बोध हो .उदाहरण के लिए -जमीन पर नीला घड़ा नहीं है. इस वाक्य के मुख्य पद 'नीला' और 'घड़ा' है .इन पदों का अभाव 'जमीन 'नामक तीसरे पद में बताया गया है. यह अभाव साधारणतया संयोजक वाक्य में होता है .

अन्यतराभाव - जब किसी वैकल्पिक या वियोजक तर्क वाक्य में प्रयुक्त दोनों वैकल्पिक पदों का अभाव होता है, तो उसे अन्यतराभाव कहते हैं. नव्य न्याय के अनुसार इसका अर्थ परस्पर अभाव है जो दो परस्पर अभावों द्वाराअवछिन्न प्रतियोगितावछेदक धर्म कहलाता है. उदाहरण के लिए- धड़ा न तो नीला है न लाल. इस वाक्य में दो वैकल्पिक पद हैं 'नीला' और ' लाल' . जब दोनों ही विकल्प

असत्य होते हैं तो वाक्य असत्य हो जाता है अर्थात दोनों विकल्पों का असत्य होना उन विकल्पों का निषेध या अभाव है. घड़ा ना तो नीला है ना लाल. इस प्रकार दोनों विकल्पों का अभाव ही अन्यतराभाव कहलाता है.

....

DR ABHA JHA